सत्तर प्रकार के वनौषधि मिश्रणों का प्रयोग करते हैं जंगली जानवरो के काटने पर पारंपरिक चिकित्सक

* 230 से अधिक विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सक दे रहे है सेवाएं

* प्राथमिक चिकित्सा मे खरपतवारों का प्रयोग

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे ं जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य मे जंगली जानवरों के काटने पर पारंपरिक चिकित्सक 70 से अधिक वनौषधि मिश्रणों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक तौर पर करते है। गंभीर रुप से घायल निवासियों की चिकित्सा मे प्राथमिक उपचार के रुप में खरपतवारों का प्रयोग होता है। राज्य मे 230 से अधिक पारंपरिक चिकित्सक प्रभावित लोगों की चिकित्सा मे दक्ष है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों मे जंगली प्याज और शहद का मिश्रण प्राथमिक उपचार के रुप मे प्रभावित हिस्सों मे लगाया जाता है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक हड़जोड़ नामक वनौषधि को जलाकर राख एकत्र कर लेते है। इस राख से घावों की चिकित्सा की जाती है। बस्तर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक कुचला नामक वनौषधि का प्रयोग बाहरी और आंतरिक तौर पर करते है। बाहरी तौर पर कुचला को हिरन के मूत्र मे औटाकर प्रयोग किया जाता है। कई पारंपरिक चिकित्सक इस हेतु मानव मूत्र का प्रयोग भी करते है ं। आंतरिक तौर पर कुचला को महुआ से बनी शराब मे औटाकर दिया जाता है। प्राथमिक उपचार के रुप मे बागबहरा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक फुडहर के दूध को प्रभावित भागों मे लगाते हैं। जबकि अंबिकापुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक चूहे के विष्ठा को बरियारा नामक खरपतवार के साथ मिला कर उपयोग करते है। पेन्ड्रा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक कटहल और मुनगा (सहजन) के फूलों को बराबर मात्रा मे मिलाकर पानी मे उबालते है और काढ़ा तैयार करते है। इस काढ़े का प्रयोग बाहरी और आंतरिक तौर पर होता है। पंकज अवधिया ने आगे बताया कि राज्य के दूरस्थ वन्य क्षेत्र, जो कि आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से कोसो दूर है, मे घायल लोगों की चिकित्सा मे ये वनौषधियाँ और पारंपरिक चिकित्सक अहम भूमिका निभा रहे है। इन प्रयोगों की लोकप्रियता इनमे प्रभावीपन की सूचक है। पंकज अवधिया ने राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि इस दिशा मे वैज्ञानिक शोध अविलंब आरंभ किये जाये ताकि छत्तीसगढ़ के इस अनोखे पारंपरिक ज्ञान से सारे जग का कल्याण हो सके।